आख़िर बोले

वे चुप रहे। लोग़ों ने कहना शुरू किया कि कैसे अध्यक्ष हैं कि कुछ बोलते नहीं। फ़िर भी वे चुप रहे। लेकिन बोले तो मानो एक 'रहस्योद्घाटन' किया। कहा कि वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा अध्यक्ष पद पर नहीं बैठाये गये हैं, कि संघ भाजपा के आंतरिक मामलों में दखलंदाजी नहीं करता, कि उन पर संघ के एजेंडे को लागू करने का कोई दबाव नहीं है, कि वे सब को लेकर चलना चाहते हैं, कि उन्हें संघ का आदमी न माना जाये। मानने न मानने से कोई फ़र्क नहीं पड़ता है। संघ के बड़े-बड़े नेताओं की जन्मभूमि और लगभग कर्मभूमि महाराष्ट्र ही रहा है। एक भाजपा के अध्यक्ष की कमी थी जिसे गडकरी साहब ने पूरा कर दिया। वैसे गडकरी संघ द्वारा भाजपा अध्यक्ष पद पर बैठाये गये कोई पहले नेता नहीं हैं। 'हिंदू तन है, हिंदू मन है,' यह भाजपा के शीर्ष पुरुष 'कवि' और राजनीतिज्ञ को भी गाना पड़ा था जिनके बारे में कहा जाता है कि उनसे बड़ा नेता पार्टी में कोई और हुआ ही नहीं। आडवाणी तो हाफ खाकी पैंट पहने कई बार संघ के सम्मेलनों में दिखाई पड़े।

निवर्तमान अध्यक्ष राजनाथ सिंह को भी आडवाणी की लानत-मलामत के बाद संघ की कृपा से ही अध्यक्ष पद मिला था, पर ये कुछ खास कर नहीं पाये। लिहाज़ा इन्हें बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। भाजपा में संघ की मर्ज़ी के बिना कोई अध्यक्ष नहीं बन सकता, यहां तक कि स्वतंत्र रूप से हाथ-पांव भी नहीं मार सकता, इसके कई उदाहरण सामने आ चुके हैं। इसे राजनीति का मामूली-सा ज्ञान रखने वाले भी भली-भांति समझते हैं। फ़िर गडकरी साहब इससे इनकार क्यों करना चाहते हैं और किसे भुलावे में डालना चाहते हैं।

राजनीति की सरगर्मियों की थोड़ी-सी जानकारी रखने वाला कौन नहीं जानता कि संघ प्रमुख मोहन भागवत ने गडकरी को अध्यक्ष के सिंहासन पर विराजमान कराने के लिए हफ़्तों दिल्ली में डेरा डाल रखा था। यह तो गडकरी साहब की खुशनसीबी है कि संघ द्वारा भाजपा अध्यक्ष बनाये जाने पर उन्हें लोग़ महाराष्ट्र से बाहर भी जानने लगे हैं, वरना बहुतेरों ने उनका नाम तक नहीं सुना था। बेशक, इसमें गडकरी साहब की कोई गलती नहीं थी। लेकिन गडकरी यह न भूलें कि जब आडवाणी से इस्तीफ़ा लिया जा रहा था तो उन्होंने संघ नेताओं को खूब खरी-खोटी सुनाई थी। यह उनके वश की ही बात थी जिन्होंने राजनीति में कुछ इस तरह की 'सक्रियता' दिखाई कि संघ के बड़ों-बड़ों के होश फ़ाख्ता होने लगे। अटल अभी शय्या पर हैं। बावजूद संघ में किसी की मजाल नहीं कि उन्हें अभी भी कोई कुछ बोल दे। बहरहाल, भाजपा की गुटबंदियों में गडकरी साहब किस घाट लगेंगे, यह अभी पता नहीं। एक तो 'राम' के 'हनुमान' ही हैं जो कभी स्वयं भाजपा अध्यक्ष पद को सुशोभित कर चुके हैं। दूसरों के बारे में कुछ कहना अभी ठीक नहीं है।

अब तो बेड़ा पार लगा दे

बहुत ज़ोर आजमा लिया, पर बात नहीं बनी। शिवराज दुबारा गद्दी पर बैठ गया, पर मैं जहां थी, वहां से भी नीचे धंस गई और लगातार धंसती चली जा रही हूं। हे, साईं! तुमसे उम्मीद भरी याचना की थी कि अपनी इस पुरानी शिष्या को चरणों में स्थान दो। पर या तो तुमने मेरी याचना पर ध्यान नहीं दिया या संघ के सामने तेरी एक न चली, तभी तो गडकरी सबके सिर पर आ बैठा। पर गडकरी तेरा और 'हनुमान' का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। यह बात संघ वाले भी जानते हैं। तभी तो संघ के संकेत पर जब कुछ गणवेशधारियों ने यह हवा उड़वानी शुरू की कि अब आडवाणी राजनीतिक संन्यास ले लेंगे तो तुमने गरज कर एक 'महारथी' की तरह कहा कि जब तक ज़िंदा हूं, तब तक राजनीति यानी महाभारत युद्ध में तीर-कमान लिए लड़ता रहूंगा। इस पर सबकी बोलती बंद हो गई।

साईं, मैंने भी संघ में रह कर ही राजनीति की दीक्षा ली थी। पर न जाने क्यों, संघ ने मुझे भुला दिया। वैसे तो कई चाहने वालों ने भी मुझे भुला ही दिया है। कौन नहीं जानता कि जवानी 'चार दिनों' की ही होती है और मुख्यमंत्री पद भी अधिक से अधिक कुछ 'दिनों' का होता है। इसलिए शिवराज फूले न समायें, यह उनसे मेरा आख़िरी अनुरोध है। रह गई बात मेरी तो अब गडकरी के अध्यक्ष बन जाने पर पार्टी में मेरा आ पाना नामुमकिन है। मेरी 'भाजपा' का हश्र लोग़ों ने देख लिया है और मैं भी यह समझ चुकी हूं कि आपकी भाजपा से निकलने वाला और निकल कर पार्टी बनाने वाला कहीं का नहीं रहता। मुंडा और कल्याण इसके उदाहरण हैं। मैं तो हूं ही। साईं, जिन्ना प्रकरण के दिनों में मैंने आपको बहुत बुरा-भला कहा था। आपने मौन रह कर मुझे जो शाप दिया, वह फल गया।

जोश में होश खोकर मैंने अटल को भी न जाने क्या-क्या कहा। पर उन्होंने बराबर मुझे अपनी बेटी के समान कहा। पर लगता है भगवन, तेरी नाराज़गी दूर नहीं हुई। पर अब मैंने अपने-आप को आपके श्रीचरणों में डाल दिया है। पहले मैंने निवेदन किया था कि मुझे वापस भाजपा में ले लिया जाये, क्योंकि मेरी 'भाजपा' चल नहीं पाई। पर अब गडकरी के रहते भाजपा में मेरा प्रवेश मुश्किल होगा। लेकिन मैं एक निवेदन और कर रही हूं साईं। मेरी पार्टी को राजग में ले लिया जाये। आप कहेंगे - 'मैं कौन होता हूं तुझे राजग में दाखिला दिलवाने का?' पर मैं सब जानती हूं। जार्ज जो राजग का संयोजक है, इतना बूढ़ा हो चुका है कि स्मृति-लोप की दशा में चला जाता है। भाजपा में उसका समर्थक कोई नहीं है। रह गया जद (यू), तो न नीतीश उसे चाहते हैं और न ही शरद। न उसे कोई पूछने वाला, न उसके नाम पर कोई रोने वाला। बेचारा, इस उम्र में बीवी और प्रेमिका के दो पाटों के बीच पैसे के बखेड़े में पड़ा हुआ है। इसलिए राजग में उसी को लिया जायेगा जिसे आप, नीतीश और शरद चाहेंगे। यह बात मेरे साथ ही सभी जानते हैं। इसलिए इतनी कृपा कर दो कि मेरी 'भाजपा' को राजग में लेने की पैरवी कर दो। नीतीश और शरद को कह दो। ये आपसे इनकार नहीं कर सकते। इतनी-सी बात मान जाओ साईं। मैं आऊंगी तो आपके चरणों में लोट-लोट कर प्रार्थना करूंगी।

गपशप

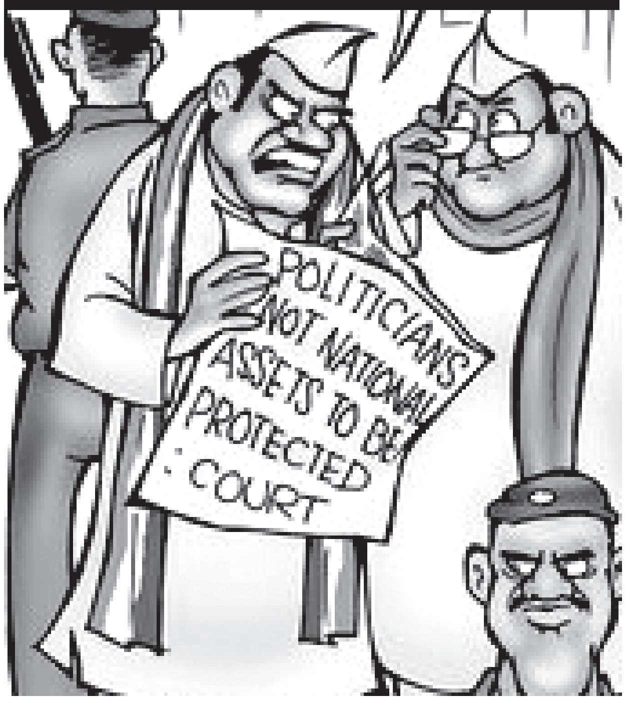

सिर्फ़ एक कॉलम में

इस बार लालू जब राजद के अध्यक्ष चुने गये तो अख़बारों ने इसकी खबर सिर्फ़ एक कॉलम में छापी और वह भी पेज-दो के एक कोने पर। और उसी एक कॉलम में उनकी एक तस्वीर भी छाप दी। अब अख़बार वाले भी बेचारे क्या करें? लालू अपनी पार्टी के अध्यक्ष होते हुए प्रजातंत्र में भी यकीन करते हैं, इसलिए अध्यक्ष पद का चुनाव करवाते हैं जिसमें उनका विरोधी कोई होता ही नहीं और अगर होता हो तो सिर्फ़ नाम भर के लिए। अगर भाजपा की तरह अध्यक्ष पद के लिए जबरदस्त चालबाज़ियां हों, तब तो अख़बार महीनों पहले से 'मसाला' छापने लगेंगे। कौन होगा अध्यक्ष, इस पर खूब लिखा जायेगा। पर लालू का क्या करें? हां, जनता दल के दिनों में अध्यक्ष पद के लिए बाकायदा तलवारें भांजी जाती थीं। शरद और लालू में टक्कर। बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री बड़े ही मृदुभाषी हैं। अध्यक्ष पद के लिए कभी कांव-कांव नहीं की। पर अब राजद में किसकी इतनी हिम्मत है कि लालू के खिलाफ़ अध्यक्ष पद के लिए खड़ा हो जाये। इसलिए कलयुग के कृष्णावतार लालू जी को गपोड़ी की सलाह है कि वे पटना में एक भव्य सम्मेलन कर यानी सभी समर्थकों का 'रैला' जुटा कर यह घोषणा कर दें कि वे जब तक जीवित रहेंगे, अपनी पार्टी के अध्यक्ष बने रहेंगे और इस महोत्सव पर अख़बार वालों को बुला कर उनकी अच्छी-खासी खातिरदारी करें। फ़िर देखें तमाशा। कम से कम अख़बारों में चौथाई कोना, वह भी रंगीन तो पा ही जायेंगे।

घर की रोटी

ऐलनाबाद सीट चौटाला पार्टी को क्या मिली, कार्यकर्ता आतिशबाजी करने लगे। सवाल है, अगर यह सीट भी उन्हें नहीं मिलती तो वे क्या करते? कहां रोने जाते? इस सीट पर जीत के बाद चौटाला ने यह घोषणा कर दी कि राज्य में अगली सरकार उनकी ही बनेगी। इस घोषणा पर विरोधी हंसने लगे। अगर ऐलनाबाद से न जीतते तो और कहां से जीतते? अपने घर में जीतना तो वैसा ही है जैसे कुत्ते का अपनी गली में भौंकना। गली का कुत्ता अपनी गली छोड़ कर दूसरे कुत्तों की मालिकाने वाली गली में भौंकने नहीं जाता। जाये तो नोच लिया जाता है और उसके लिए वहां से जान बचा कर भाग पाना भी मुश्किल हो जाता है। यह अलग बात है कि कांग्रेस में कुत्ते नहीं हैं जो अपनी गली में भूंक कर शेर होने का दावा करते हैं। कांग्रेस को छोड़ें तो लगभग सभी दलों में भौंकने और दुम हिलाने वाले ये पशु हैं। पर घर से मिली रोटी और कहीं से कुछ बोटी मिल जाने पर वे इतना नहीं इतराते जितना चौटाला और उनके लगुये-भगुये इतरा रहे हैं।

सुशासन बाबू की नाटकबाजी

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने गांवों में मंत्रिमंडल की बैठक कर एक इतिहास बनाया है, ऐसा उनके दल के लोग़ कहते हैं। वास्तव में नीतीश के पहले किसी ने ऐसा नहीं किया था। इस पर मुख्यमंत्री के विरोधी दलों के नेताओं ने इसे नाटकबाज़ी बताया तो नीतीश ने इस अमल पर कि हाथी चले बजार, कुत्ते भूंके हज़ार, कुछ भी नहीं कहा। विरोधी दलों के नेता जल-भुन कर रह गये। भाजपा से गठबंधन कर लगभग चार साल तक बिहार की सत्ता पर काबिज़ रह कर इन्होंने बड़ी 'शांति' और 'व्यवस्था' से काम किया। यह 'शांति-व्यवस्था' इस नीति पर आधारित रही कि नक्सलियों से पंगा नहीं लिया जायेगा और अगर वे कहीं हमला करते हैं तो पुलिस-फ़ोर्स दुबक जायेगी। नक्सलियों को आराम से उनके ऑपरेशन करने दिये जायेंगे। इससे बिहार पुलिस नीतीश की बड़ी प्रशंसक बन गई। अफ़सरान तक कहने लगे कि 'भाई, मुख्यमंत्री हो तो ऐसा।' एक तरफ़ नीतीश जहां गांव-गांव में जा कर कहने लगे कि सरकार किसी भी कीमत पर गुंडा तत्वों पर रोक लगायेगी, वहीं अफ़सरों को संदेश भिजवा दिया कि उन्हें सिर्फ़ चुपचाप बैठने की जरूरत है। कारण यह कि पुलिस यदि सक्रिय होती है और वास्तव में होती है तो नीतीश कुमार के वे साथी भी पकड़ में आ सकते हैं जिनके बल पर उन्हें बहुत भरोसा है। ऐसे गुंडों का सिरमौर बाढ़ शहर का अनंत सिंह नाम का माफ़िया सरदार है जो सूर्योदय के साथ ही सफ़ेद कपड़े पहन लेता है और सूर्यास्त के साथ काले कपड़े। उसकी कोठी पर दर्जनों निजी सुरक्षाकर्मी एके-47 लेकर घूमा करते हैं। वह पत्रकारों को शाही अंदाज में इंटरव्यू देता है और उनकी अच्छी खातिरदारी करता है। पाठकों को समझ में आ गया होगा कि नीतीश कुमार कैसा 'बगुला भगत' है जो गांवों में कैबिनेट की मीटिंग करने का नाटक करता है। सिर्फ़ इतना ही नहीं, इसने आश्वासन दे रखा है कि जेपी मूवमेंट में शामिल जो लोग़ जेल गये थे, पुलिस प्रताड़ना आदि के शिकार हुए थे, उन्हें मंथली पेंशन दी जायेगी। इतना बड़ा नाटकबाज़ है यह। जनता के सामने समस्या यह है कि फ़िलहाल सुशासन बाबू के ओर कोई विकल्प भी नहीं है।

नक्सली-झामुमो भाई-भाई

देश में जिन राज्यों में नक्सलवाद ने ज़ोर पकड़ा है, उनमें से एक है झारखंड। जब झारखंड बिहार से अलग नहीं हुआ था, तब भी पूरे बिहार में सबसे ज़्यादा नक्सली गतिविधियां आज के झारखंड में ही चला करती थीं। आज स्थिति यह है कि जो महिलायें पीठ पर बच्चे का बांध कर मज़दूरी करने जाती थीं और न जाने कितनी बुरी नज़रों का सामना करती थीं, अब कंधे पर एके-47 लेकर बीहड़ों में पूर्णत: निर्भीक और निर्द्वंद्व भाव से पहाड़ों की शेरनी के रूप में विचरण करती हैं। आज साहस है, टुटपुंजिये हो चुके तथाकथित सामंतों और उनके पुत्रों में कि वे उनके साथ बलात्कार करें और नहीं तो छेड़खानी का ही मज़ा लें? नहीं, अब वे ऐसा नहीं कर सकते। अगर करने का दुस्साहस किया तो किसी दूसरी ओर से तीर की तरह आती एके-47 की गोलियां उनके शरीर के ज़र्रे-ज़र्रे को बींध डालेंगी। झारखंड के पहले मुख्यमंत्री मुंडा के लडके के साथ ऐसा ही हुआ जो अपने गांव से कुछ ही दूरी पर बैठ कर मनोरंजन कर रहा था और शराब के नशे में डूबा बाहर से बुलाई गई नाच पार्टी की नृत्यांगनाओं के साथ रात बिताना चाहता था। उसका सगा चाचा भी उस समारोह में मौजूद था, पर पहचान स्पष्ट नहीं होने के कारण और किसी मेज के नीचे छिप जाने से वह बच गया। वैसे, नक्सली जो निशाना साधते हैं, वह व्यर्थ नहीं जाता। सांप न मिला, संपोला ही सही। अभी से ही डसने लगा था। खास बात यह है कि उसकी हत्या कर दिये जाने के बाद कोई नहीं रोया और उसके परिवार के सदस्य अज्ञातवास पर चले गये।

जहां तक झारखंड का सवाल है, पहले से उसकी दशा हीन से हीनतर होती चली जा रही है। औरतों को 30-35 हज़ार की रकम पर बिकने के लिए मजबूर किया जा रहा है। बढ़ती महंगाई के कारण आदिवासियों के लिए नमक तक खरीदना मुश्किल हो गया है। नमक के बिना खाना साधू-संत और ढोंगी बाबागण ही करते हैं और वह भी समय-समय पर। बच्चे ओर लड़कियां खास तरह के पत्ते खोजने मुंह अंधेरे निकल पड़ते हैं। उन पत्तों को उबाल कर खा लिया जात है। यानी जानवर से बस एक डिग्री ऊपर। फ़र्क यही है जानवर कच्ची घास चबाता है और ये हमारे आदिवासी बंधु उसे उबाल कर थोड़ी मिर्च और नमक के साथ खा लेते हैं।

अब गुरु जी ने नक्सलियों को अपना भाई घोषित किया है और उनसे समझौता वार्ता करना चाहते हैं। कहते हैं कि गुरु जी के इस बयान के बाद नक्सलविरोधी पुलिस अधिकारी डिप्रेशन के दौर में जाने लगे हैं और कई तो हताशा की स्थिति में आने के बाद अब नौकरी छोड़ने का ही मन बना रहे हैं। वैसे, गुरु जी द्वारा भाई-भाई वाली घोषणा के विरोध में नक्सलियों ने ताबड़तोड़ आधुनिकतम हथियारों से जम कर गोलियां चलाईं। पर गुरु जी इस सबसे अप्रभावित अपनी एयरकंडीशंड कुटिया में सत्ता की शतरंज बिठाये चालें चल रहे हैं। उनका कहना है कि इस खेल से राजनीति में काम करने वालों के ज्ञान-चक्षु खुलने लगते हैं। मुलाकात करने के दौरान गुरु जी की थोड़ी ही प्रशंसा करने के बाद वे अतिशय प्रसन्न हो गये और कहा कि नरसिंह राव की सरकार बचाने के साथ से लेकर अब तक जो कुछ उन्होंने भुगता है, उसे या तो मैं जानता हूं या ऊपर नीली छतरी वाला। अब बस एक ही तमन्ना है कि मैं भी स्विट्ज़रलैंड के गुप्त खातों में अपना धन जमा कराऊं। पर कराऊं कैसे? पास फूटी-कौड़ी तक नहीं। पर चिंता नहीं, धीरे-धीरे कमा लूंगा और बेटे-पोतों की स्विट्ज़रलैंड यात्रा का प्रबंध हो जाएगा। ये बातें कहते-कहते वे अचानक चुप हो गये। उन्होंने सिर पर हाथ रख कर कहा - 'हाय, ये मैंने क्या कह दिया। मैं बहुत गरीब आदमी हूं। मुख्यमंत्री रहने से क्या कोई अमीर हो जाता है? इस बार भी मुझे कुर्सी से हटाने के लिए बड़ी-बड़ी चालें चली जा रही हैं। पर इस बार भी मैं मैदान नहीं छोड़ूंगा। अरे...पर मैं यह सब आपसे क्यों कह रहा हूं। एक आफ़त और आ गई। कल के अख़बार में तुम इसे दोगे और विरोधियों से तो मैं निपट लूंगा, पर आला मान से कैसे निपट पाऊंगा। अब तो भैया तुम ही मेरे मददगार हो। तुम चाहो तो आफ़त में पड़ी मेरी राजनीतिक ज़िंदगी को बचा सकते हो। वैसे भी ये सारी बातें मैंने ऑफ द रिकार्ड ही कही है। अब तुम जानों, तुम्हारा धरम जाने।' मैंने जब कहा कि गुरु जी, आप बेकार चिंतित हो रहे हैं। आपकी समस्याओं का शीघ्र समाधान होगा। अभी तो मैं सिर्फ़ अनौपचारिक बात करने के लिए आया था, कहें तो ऑफ द रिकार्ड गायब कर दूं। यह कह कर पत्रकार महोदय ने वह सीडी गुरु जी हाथों में ही थमा दी। गुरु जी इस कदर प्रसन्न हुए कि मुझे बाहों में जकड़ लिया। कहा कि इस अहसान के बदले में तुम्हें एक बेशकीमती उपहार दूंगा। तेरी तनख्वाह बहुत कम है। मैं तुझे पैसे कमाने के गुर बताऊंगा। अब आज एनर्जी ड्रिंक पी। पर मैंने कहा कि छुट्टी का क्या होगा? उन्होंने कहा कि मैटर ई-मेल कर दे। कह दे, अचानक सिर में बहुत तेज़ दर्द हो गया। कौन जानता है कि अभी तू मेरे पास बैठा है। और काम तो तूने किया ही, तभी तो मैटर भेज रहा है। फ़िर उन्होंने एक लड़के को आवाज लगाई और कहा कि इसे फटाफट मेल कर दे। मेरा ई-मेल नंबर भला किसे याद होगा। जा जल्दी कर। इसके बाद काजू, नमकीन, सोडा, बर्फ आदि के इंतजाम होने लगे। डिनर के लिए मेनू में मुर्गे की टांगों पर सहमति बन गई। पीकर मुंडारी भाषा में उन्होंने गाना गया। थोड़ा नृत्य भी पेश किया। फ़िर ऐसे वक्त में जो बातें होती हैं, होने लगीं। जिसका न सिर न पांव।